साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 37, मई(द्वितीय), 2018

एक ही थैले में आँसू और मुस्कान

रमेश यादव

मेजर आनंद उस पत्र को बार - बार देख रहे थे। ऊपर नीचे, उलट - पुलट करते हुए, कुछ सोचते, निहारते तो कुछ चकित भी थे। शायद मन में कुछ विचार हलकोरें ले रहे थे। मगर चेहरे पर एक प्रकार की खुशी भी झलक रही थी। हलकी - सी चेहरे पर आती और फिसल भी जाती। पत्र को हाथ में लेकर वो अपने अतीत में खो गए। आर्मी की छत्तीस इंच सीनेवाली नौकरी। देश की रक्षा और सुरक्षा के लिए मर-मिटने का माद्दा, अनुशासित ज़िंदगी, परेड- पार्टियां, पुरस्कार, मान - सम्मान, पराक्रम इत्यादि, इत्यादि..... ।

वो सारे दृश्य किसी डॉक्यूमेंट्री की तरह उनकी आँखों के सामने से गुजर रहे थे। एक सिपाही से ज़िन्दगी शुरू की थी और मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए। इतने सालों तक सेना की नौकरी करने के बाद अब सिविलियन ज़िंदगी जीने की मजबूरी आ गई थी। सेना की शॉर्ट सर्विस नौकरी के बाद अब नए सिरे से नए जीवन को शुरू करने की कश्मकश दिल में उथल- पुथल मचा रही थी।

एक साल के अंतराल के बाद यह नियुक्ति पत्र उन्हें मिला था। एक ओर वो जीवन था जहां शौर्य, वीरता, सैनिकी रूतबा, चमक - दमक, और आँखें चौंधियां जाएं ऐसी परंपरागत जीवन- शैली थी। वहाँ सब कुछ दर्शनीय और इतिहास की धरोहर में शुमार था। वहीं दूसरी ओर ये जन सामान्य की ज़िन्दगी को जीने का संघर्ष, दाल- चावल, कपड़ा - लत्ता, घर- परिवार, बच्चों की शिक्षा, गांव की खेती- बाड़ी, बुजूर्ग माता-पिता, शादी- ब्याह, तीज त्योहार और ना जाने किन किन बातों का तनाव.....। इन बातों को लेकर चिंता तो तब भी थी, पर प्रत्यक्ष नहीं थी। इस फ्रंट पर पत्नी अकेली संघर्ष कर रही थी। हमारा जुड़ाव तो मोरल सपोर्ट तक ही सीमित था।

पत्नी रमा यह पत्र लेकर उनके पास आयी थी। वो नहीं चाहती थी कि अब पति महोदय कोई ऐसी नौकरी करें जो उन्हें पुन: परिवार से अलहदा कर दे । एक तो इतने सालों का बेदर्दी इंतजार.....अब तो चेहरों पर उम्र ने नया रंग पोत दिया था। मगर क्या करें वक्त तमाम सवालों के साथ जवाबों को भी साथ ले आता है। रमा चाहती थी कि मेजर साहब जो भी नई नौकरी करें वो परिवार के साथ रहकर इसी शहर में करें। पर क्या करे ! आखिर नून- तेल, बच्चों की पढ़ाई- लिखाई, घर- परिवार के लिए आमदनी तो चाहिए ना ! नौकरी तो करनी ही पड़ेगी। इस तरह घर बैठकर तो जीवन नैय्या पार नहीं होगी। इस बात को रमा खूब समझती थी, किंतु उसके भीतर की स्त्री , उसका प्यार, उसकी तनहाइयां उफान मार रही थीं।

पुन: तनहा जीवन.....! इस कल्पना मात्र से ही उसके रोंगटे खड़े हो जाते। खैर उसकी ये गुत्थी थी..... वह अपने मन से संघर्ष कर रही थी और सुलझाने का प्रयास कर रही थी।

कोई उत्तर ना मिलते देख वह मेजर साहब के कमरे में गई और बगलवाली कुर्सी पर चुपचाप बैठ गई। बिना ग्लिसरीन के धारा प्रवाह आँसू बहाती रही। मेजर साहब उसकी भावनाओं को समझ रहे थे। दिल की गहराइयों से उसे सहलाने की कोशिश करने लगे। " अरे पगली ये जो पत्र लाई हो वो बड़ी प्यारी- सी खुशखबरी है। जानती हो यह क्या है....."

" सब जानती हूँ जी। अब आप फिर नौकरी के सिलसिले में किसी प्रदेश निकल जाएंगे हमें अकेला छोड़कर..... मैं रोक नहीं पाऊँगी..... आपको अकेले रहने की आदत- सी पड़ गई है। मैं नहीं बोलती जाओ..... छोड़ो मुझे अब मस्का मत लगाओ....."

" अरे पगली पूरी बात तो सुनो..... एक सरकारी बैंक में रिकवरी ऑफीसर के रूप में मेरी विशेष नियुक्ति हो रही है। अब मध्यप्रदेश छोड़कर हमें मुंबई जाना होगा। नौकरी के साथ - साथ सरकारी क्वार्टर भी मिल रहा है। अब हम पूरे परिवार के साथ वहां जाएंगे, और एक साथ रहेंगे। अब तो हँस दो मेरी रानी.....ये आँसू पोंछ लो। खत्म हुए जुदाई के दिन और चलो शुरू करते हैं नई ज़िंदगी, वह भी मुंबई जैसे सपनों के महानगर में.....जी हां वही मुंबई जो मायानगरी है, सपनो का शहर है, बनते - बिगड़ते ख्वाब हैं, अमीरी है, गरीबी है। तो चलो चलते हैं हादसों के शहर में, अगले महीने रिपोर्ट करना है, तैयारी शुरू कर दो। मोनी को वहीं पढ़ायेंगे। उसे डॉक्टर बनाएंगे और राहुल को इंजीनियर..... क्या ख्याल है.....।"

रमा शरमा गई। उसकी आँखों में एक मुस्कान तैर गई। भारतीय नारी के लिए इतना सपना ही काफी होता है। आँसूओं को पोंछते हुए वह सीधे पड़ोसन के घर पहुँची। डाकिए ने एक डाक उसके घर भी दिया था। रमा अब बहुत खुश थी। मानों उसने आकाश को छू लिया हो। पड़ोसन को यह खुशखबरी भी तो देनी थी, आखिर रानी उसकी बेस्ट सहेली जो ठहरी ! अब वह चिंताओं की अटारी से बाहर निकलकर मन के झूले पर सवार जो हो गई थी।

" रानी क्या कर रही हो ! जानती हो, अगले महीने से हम लोग मुंबई जा रहे हैं। मेजर साहब को नई नौकरी मिल गई है। मगर मैंने देखा डाकिया तुम्हारे घर भी एक पत्र दे गया था ना ! तुम्हारे यहां क्या खबर आयी है ?"

रानी का चेहरा उतरा हुआ था, फिर भी वह बोली, " रमा बधाई हो, यह तो बड़ी प्यारी खबर है। उससे भी प्यारी खबर ये है कि तुम सभी लोग साथ जा रहे हो और अब तुम्हारा परिवार साथ रहेगा। सखी हम लोग भी दो- चार दिनों के लिए मुंबई जा रहे हैं, आज शाम को ही निकलना है।"

"अरे इतने अचानक क्या बात है, सब ठीक तो है ना !"

" नहीं सखी कुछ ठीक नहीं है तुम मेरे देवर सुनील को जानती हो ना !" इतना कहते ही उसकी आँखें डबडबा गई..... " सुनील अब इस दुनिया में नहीं रहा।" रमा ने उसे धीरज दिया उसे अपनी गोद में ले लिया। बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए वह बोली-

" ये डाकिया भी कमाल का इंसान होता है, देखो ना, एक ही दिन एक ही समय पर दो डाक आएं..... कहीं गम तो कहीं खुशी..... मुझे निदा फाज़ली जी का वो दोहा याद आ रहा हैं -

" सीधा- सादा डाकिया करता काम महान
करता काम महान,
एक ही थैले में रखता आँसू और मुस्कान।"

"वाह..... क्या ज़मीनी सच्चाई है ना इन पंक्तियों में, अच्छा ये बता सुनील को हुआ क्या था ? कितना नेक इंसान था ना, सीधा- सादा किसी गऊ की तरह बेचारा ! बीमार था क्या ? "

"अरे, नहीं बहना, उसका तो अपना बिजनेस था वहाँ। बाल- बच्चों के साथ अच्छी ज़िंदगी कट रही थी। बिजनेस के सिलसिले में उसने किसी प्राइवेट बैंक से लोन ले रखा था। इस समय व्यापार कुछ मंदा चल रहा था। तुम तो जानती हो पूरी दुनिया में आर्थिक मंदी चल रही है इस समय। आजकल तो एक देश की समस्या का असर तुरंत दूसरे देश पर पड़ता है। अमेरिका में छींक भी आयी तो दूसरे देश इससे प्रभावित होते हैं। विदेशों में तो हालत और भी गंभीर हैं। इस मंदी के चलते कई उद्योग- धंधे और कंपनियां बंद हो रही हैं। हर तरह से कर्मचारियों की छँटनी की जा रही है। विदेशों से भाग- भागकर लोग अपने देश जा रहे हैं। इसका असर भारत के व्यापारियों पर भी पड़ा है। कई दिनों से सुनील बहुत परेशान था । दो बार उसने मुझे फोन किया था, मैंने धीरज देकर कहा था कि व्यापार में तो ऊपर - नीचे चलता ही रहता है। समय के साथ सब ठीक हो जाएगा तुम परेशान ना हो ! बहन मैं स्थिति की गंभीरता को तब समझ नही पायी, और ये कांड हो गया।"

" हाँ मगर हमारे सुनील को क्या हुआ, वो तो भला चंगा था।"

" सुनील बैंक की लोन की किश्त को भर नहीं पा रहा था। पिछले कई महीनों से बैकवाले उसे परेशान कर रहे थे। एक दिन बैंक के रिकवरी एजेंट और उसके गुंडों ने सुनील के घर जाकर धमकी दी कि आठ दिनों के अंदर यदि वो लोन नहीं चुकायेगा तो वे लोग घर से सामान और गाड़ी उठा ले जाएंगे। जाते- जाते यहां तक कह गए कि तुम्हारी बीवी और बेटी को भी नहीं छोडेंगे । जालिमो की ये बात सुनील को चुभ गई और वह सदमें में आकर बीमार पड़ गया। सुनील स्वभाव से ज़ज़्बाती और भावनात्मक था, ये तो तुम जानती हो। तीन दिनों तक अस्पताल में रहा और दम तोड़ दिया। हम वहां जाने की तैयारी कर रहे थे पर रेल का टिकट ही नहीं मिला। अभी एक घंटे पहले ही उसके गुजर जाने का फोन आया और अब ये चिट्टी जिसमें पुरानी खबर है कि सुनील बीमार है..... । खबर सुनकर मैं टूट गई..... घर में वही मेरा सबसे

प्यारा सदस्य था.....भगवान ने उसे भी छीन लिया.....।" यह कहकर रानी फूट- फूटकर रोने लगी। रमा ने उसे धीरज दिया और सहलाया।

" अब होनी को कौन टाल सकता है ! मुसीबतें हमारी जिंदगी की एक सच्चाई है। कोई इस बात को समझ लेता है तो कोई पूरी ज़िंदगी इसका रोना रोता है। ज़िंदगी के हर मोड़ पर हमारा सामना मुसीबतों से होता है। इसके बिना ज़िंदगी की कल्पना भी नहीं की जा सकती। मगर वो रिकवरीवाले थे या जानवर ! हैवानियत की भी हद होती है बहन ! अरे ये भी कोई तरीका है लोन वसूलने का ! ये तो इंसानों को मौत के घाट उतारने का रास्ता है ! खैर बहन, जो हुआ उसे ईश्वर की मर्जी मानों और अपने आपको संभालो। तुम टूट जाओगी तो सोचो सुनील बहू का क्या होगा ? तुम तैयारी करो, हम शाम को तुमसे मिलने आएंगे।"

रमा सहेली के घर से निकली और सीधे मेजर साहब के कमरे में दाखिल हुई। एक साँस में उसने रानी के घर घटी सारी बात बता दी ।

" हमें ये नौकरी नहीं चाहिए, ये तो पिसाची काम है। लोगों को डरा- धमकाकर लोन वसूलना कहां की बैंकिंग है ! क्या आप यमदूत बनने जा रहे हैं ?"

" अरे, यह तो बहुत बुरा हुआ रानी के देवर के साथ ! बैंकवालों को इस तरह से नहीं पेश आना चाहिए था । मगर रमा हमारी नौकरी सरकारी बैंक में है। वहाँ ऐसा कुछ नहीं होता। लोन वसूलने का वहां अपना सिस्टम होता है। तुम ऐसा क्यों सोच रही हो कि मैं भी वैसी ही पेश आऊंगा, क्या तुमको मुझ पर भरोसा नहीं है ? वो लोग रिकवरी एजेंट थे, मैं रिकवरी ऑफीसर की पोस्ट पर जा रहा हूँ। वो लोग कमिशन पर काम करते हैं, मैं तनख्वाह पर नौकरी करने जा रहा हूँ। एक जिम्मेदारी और जवाबदेही की कुर्सी संभालने जा रहा हूँ। इस नियुक्ति से मैं बहुत खुश हूँ। इस तरह की खबरें मैंने भी अखबारों में पढ़ी है। मैं समझ सकता हूँ कि ये क्या माजरा रहा होगा। इसीलिए हमें प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। रमा जरा मेरी आँखों में देखो..... प्रिये, मैं सेना में अधिकारी था। देश की रक्षा और सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सैनिकों पर होती है । देश की रक्षा का मतलब सिर्फ सीमाओं की सुरक्षा नहीं, बल्कि देशवासियों की रक्षा भी होती है। किसी निर्दोष की जान लेना हमारा मकसद नहीं होता। हम तो कसूरवारों और गद्दारों को सजा देते हैं। जान की बाजी लगाकर हम दुश्मनों से लड़ते हैं। इसी जिम्मेदारी से मैं इस अराजकता को दूर करना चाहता हूँ। मगर हाँ, सुनील के कातिलों को हम नहीं छोड़ेगे, मैं अभी तमाम सरकारी महकमों में शिकायत दर्ज कराता हूँ। मुंबई जाकर इस काम को अंजाम तक पहुंचाने के लिए मैं संकल्परत हूँ। शाम को रानी और उसके पति से विस्तार से हम बात करते हैं।"

" हां ये बदलाव तो होना ही चाहिए। पहले ऐसा नहीं था। मैंने कभी नहीं सुना है कि बैंकवाले घर जाकर डराते- धमकाते हैं। सुनील के घरवालों के लिए हमें कुछ करना चाहिए। वो लोग तो बेचारे दुख

की घड़ी में हैं।" कहते हुए रमा मेजर साहब के बाहों में समा गई। अपने मन को शांत करने के साथ- साथ पति के फैसले का समर्थन करना चाह रही थी।

" रमा बचपन से ही मेरी ख्वाहिश थी कि मैं बैंक में नौकरी करूँ। तब संभव नहीं हो पाया, अब ज़िंदगी की दूसरी पारी में ही सही, मगर उस सर्वशक्तिमान ने मेरी बात सुन ली। हमारे बाबूजी गरीब किसान थे, किसान तो आज भी हैं, पर बच्चों की नौकरी के कारण घर की गरीबी कुछ दूर हो गई है । रमा, मुझे याद आ रहा कि उस ज़माने में बैंक में खाता खोलने के लिए मैं और बाबूजी लगभग एक सप्ताह तक परेशान रहे। जानती हो क्यों ! एक तो जानकारी का अभाव और दूसरे बैंक के दरवाजे पर खड़े बड़ी- बड़ी मूछोंवाले उस दरवान से । उसकी दो नाली की बंदुख देखकर हमारी हिम्मत ही नहीं होती थी वहां तक जाने की। दूर से ही उसे देखकर हम घर लौट आते थे। खैर, मुसीबतें चाय के कप में जमीं मलाई की तरह होती हैं, कामयाब वो होता है, जो फूँक मारकर मलाई को बगल में कर दे और किनारे से चाय पी ले।"

रमा के तो मानो होश उड़ गए हों। अपने पति के इस चिंतन पर वह गर्व महसूस कर रही थी। उसने दबी ज़ुबां से हामी भर दी। अब उसे अपने सामने एक स्वप्निल सुबह दिखाई दे रही थी। मेजर साहब की आवाज में मानवीय स्पर्श की झलक थी जो धीमी- धीमी बहती रमा की जल तरंगों को सुखद अनुभूति दे रही थी। खुशहाली और चिंता की मुक्ति से रमा आहिस्ता- आहिस्ता पिघल रही थी।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें